LATEST EDITION

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RPSC

# राजस्थान

# 1st GRADE

## स्कूल व्याख्याता (PAPER-1)

[भाग -1] इतिहास (भारत +राजस्थान) + भूगोल

HANDWRITTEN NOTES

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# 1ST GRADE

# स्कूल व्याख्याता

## PAPER – 1

भाग – I इतिहास (भारत + राजस्थान )+ कला एवं संस्कृति + भूगोल

# प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान I^st^ Grade (स्कूल व्याख्याता)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान I^st^ Grade (स्कूल व्याख्याता)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

***अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।***

**प्रकाशकः**

**INFUSION NOTES**

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

**WhatsApp करें - https://wa.link/gjvgqe**

**Online Order करें - https://shorturl.at/CDPX4**

**मूल्य : ₹**

**संस्करण : नवीनतम (2023-24)**

## *इतिहास (भारत + राजस्थान)*


1. *गुप्त काल एवं मुग़ल काल में साहित्य, कला और वास्तु कला का विकास* 1
2. *मुग़ल कालीन स्थापत्य कला, वास्तु कला, चित्र कला* 11
3. *1857 का स्वतंत्रता संग्राम* 24
4. *राष्ट्रवादी आंदोलन का उदय* 34
5. *राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता* 52
    - *सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण*
    - *राजा राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती और विवेकानंद*


## ***<u>राजस्थान का इतिहास</u>***


1. ***राजस्थान की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता*** 69
    - ***कालीबंगा***
    - ***आहड़ सभ्यता***
    - ***गणेश्वर सभ्यता***
    - ***बैराठ सभ्यता***

2. 8 वीं से 18 वीं शताब्दी तक राजस्थान का इतिहास 77

3. अजमेर के चौहान 81

4. दिल्ली सल्तनत के साथ संबंध (मेवाड़, रणथम्भौर और जालौर) 83

- राणा सांगा
- महाराणा प्रताप सिंह
- राजसिंह
- चन्द्रसेन
- मानसिंह
- महाराजा रायसिंह

5. राजस्थान में मुगल शासन 135

6. 1857 और राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास 140

7. राजस्थान में राजनैतिक जाग्रति 146

8. प्रजामंडल आंदोलन 152

9. किसान और आदिवासी आंदोलन 156

10. राजस्थान का एकीकरण 169

## राजस्थान में समाज एवं धर्म


| | |
|---|---|
| 1. लोक देवता और लोक देवियाँ | 175 |
| 2. राजस्थान के संत | 184 |
| 3. वास्तुकला – मंदिर किले और महल | 193 |
| 4. पेंटिंग्स – चित्रकला | 207 |
| 5. मेले और त्यौहार | 216 |
| 6. सामाजिक रीतिरिवाज, प्रथाएं, ठिकाना व्यवस्था | 229 |
| 7. वस्त्र एवं आभूषण | 241 |
| 8. लोक संगीत और लोक नृत्य | 245 |
| 9. भाषा और साहित्य | 257 |


## राजस्थान का भूगोल


| | |
|---|---|
| 1. स्थिति एवं विस्तार - सामान्य परिचय | 269 |
| 2. प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं | 284 |
| 3. प्रमुख नदियाँ एवं झीलें | 297 |
| 4. जलवायु | 315 |
| 5. जनसंख्या वितरण, विकास, साक्षरता, लिंगानुपात | 318 |
| 6. कृषि | 331 |
| 7. पशुपालन | 340 |

8. खनिज संसाधन 345
9. ऊर्जा संसाधन 354
10. पर्यटन और परिवहन 365
11. राजस्थान राज्य के प्रमुख उद्योग 385

# अध्याय – I

## गुप्त काल एवं मुग़ल काल में साहित्य, कला और वास्तुकला का विकास

### गुप्तयुगीन कला एवं वास्तुकला

#### वास्तु-कला – मंदिर

- गुप्तयुगीन वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण मंदिर हैं। वस्तुतः मंदिर के अवशेष हमें इसी काल से मिलने लगते हैं। गुप्तकालीन मन्दिरों कुछ सामान्य विशेषतायें हैं जो इस प्रकार हैं-
- गुप्तकालीन मंदिरों का निर्माण सामान्यतः एक ऊँचे चबूतरे पर हुआ था, जिन पर चढने के लिये चारों ओर से सीढियाँ बनाई गयी थी।
- प्रारंभिक मंदिरों की छतें चपटी होती थी, किन्तु आगे चलकर शिखर भी बनाये जाने लगे।
- मंदिर के भीतर एक चौकोर अथवा वर्गाकार कक्ष बनाया जाता था, जिसमें मूर्ति रखी जाती थी। यह मंदिर का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग था, जिसे गर्भगृह कहा जाता था।
- गर्भगृह तीन ओर से दीवारों से घिरा होता था। जबकि एक ओर प्रवेशद्वार बना रहता था।
- पहले गर्भगृह की दीवारें सादी होती थी, किन्तु बाद में चलकर उन्हें मूर्तियों तथा अन्य अलंकरणों से सजाया जाने लगा।
- गर्भगृह के चारों ओर ऊपर से आच्छादित प्रदक्षिणा-पथ बना होता था।
- गर्भगृह के प्रवेशद्वार पर बने चौखट पर मकरवाहिनी गंगा और कूर्मवाहिनी यमुना की आकृतियाँ उत्कीर्ण मिलती हैं, जो गुप्तकला की अपनी विशेषता है। ऊपर के शिरापट्ट तथा पार्श्व भाग में भी हंस-मिथुन, स्वस्तिक, श्रीवृक्ष, मंगलकलश, शंख, पद्म आदि पवित्र मांगलिक चिन्हों एवं प्रतीकों का भी अंकन किया गया है। द्वार के अलंकरण के संबंध में वाराहामिहिर का मत है, कि द्वार शाखा के चौथाई भाग में प्रतिहारी (द्वारपाल) तथा शेष में मंगल विहग, श्रीवृक्ष, स्वास्तिक, घट, मिथुन, पत्रवल्ली आदि का अंकन का उल्लेख किया है।
- पहले गर्भगृह के सामने एक स्तंभ युक्त मंडप बनाया जाता था, किन्तु बाद में चलकर इसे गर्भगृह के चारों ओर बनाया जाने लगा। द्वार स्तंभ अलंकृत होते थे, जिनमें पूर्णकलश की आकृति बनी रहती थी। कलश से पुष्प बाहर निकलते हुए दिखाई देते हैं।
- मंदिर के वर्गाकार स्तंभों के शीर्षभाग पर चार सिंहों की मूर्तियां एक दूसरे से पीठ सटाये हुए बनाई गयी हैं।
- गर्भगृह में केवल मूर्ति स्थापित रहती थी। उसमें उपासकों के एकत्र होने का कोई स्थान नहीं बनाया गया था।
- गुप्तकाल के अधिकांश मंदिर पाषाण निर्मित हैं। केवल भीतरगाँव तथा सिरपुर के मंदिर ही ईंटों से बनाये गये हैं।

#### गुप्तकालीन महत्त्वपूर्ण मंदिर मंदिर स्थान

1- विष्णुमंदिर तिगवा (जबलपुर मध्य प्रदेश)
2- शिव मंदिर भूमरा (नागोद मध्य प्रदेश)
3- पार्वती मंदिर नचना-कुठार (मध्य प्रदेश)
4- दशावतार मंदिर देवगढ़ (झांसी, उत्तर प्रदेश)
5- शिवमंदिर खोह (नागौद, मध्य प्रदेश)
6- भीतरगांव का मंदिर लक्ष्मण मंदिर (ईंटों द्वारा निर्मित) भितरगांव (कानपुर, उत्तर प्रदेश)

#### प्रमुख मंदिर –

- गुप्त काल में मंदिर बनाने का विकास प्रारम्भ हो गया था। गुप्त काल स्थापत्य काला, साहित्य और संस्कृति के लिए स्वर्ण युग कहा गया है।
- गुप्त काल की वास्तुकला को सात भागों में बाँटा जा सकता है- राजप्रासाद, आवासीय गृह, गुहाएँ, मन्दिर, स्तूप, विहार तथा स्तम्भ।
- राजप्रासाद की बहुत प्रशंसा की है। इस समय के घरों में कई कमरे, दालान तथा आँगन होते थे। छत पर जाने के लिए सीढ़ियाँ होती थीं जिन्हें सोपान कहा जाता था। प्रकाश के लिए रोशनदान बनाये जाते थे जिन्हें वातायन कहा जाता था।
- गुप्तकाल में ब्राह्मण धर्म के प्राचीनतम गुहा मंदिर निर्मित हुए। ये भिलसा (मध्य-प्रदेश) के समीप उदयगिरि की पहाड़ियों में स्थित हैं। ये गुहाएँ चट्टानें काटकर निर्मित हुई थीं। उदयगिरि के अतिरिक्त अजन्ता, एलोरा, औरंगाबाद और बाघ की कुछ गुफाएँ गुप्तकालीन हैं।
- गुप्तकाल में मूर्तिकला के प्रमुख केन्द्र मथुरा, सारनाथ और पाटिलपुत्र थे। गुप्तकालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ हैं कि इन मूर्तियों में भद्रता तथा शालीनता, सरलता, आध्यात्मिकता के भावों की

अभिव्यक्ति, अनुपातशीलता आदि गुणों के कारण ये मूर्तियाँ बड़ी स्वाभाविक हैं।

- इस काल में भारतीय कलाकारों ने अपनी एक विशिष्ट मौलिक एवं राष्ट्रीय शैली का सृजन किया था, जिसमें मूर्ति का आकार गात, केशराशि, माँसपेशियाँ, चेहरे की बनावट, प्रभामण्डल, मुद्रा, स्वाभाविकता आदि तत्त्वों को ध्यान में रखकर मूर्ति का निर्माण किया जाता था। यह भारतीय एवं राष्ट्रीय शैली थी।

## गुप्त काल की मूर्तिकला

गुप्त मूर्तियां उस कलात्मक प्रतिभा को दर्शाती हैं जो गुप्त वंश में प्रमुख थी। भारत ने ५ वीं शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के रूप में एक और युग की शुरुआत देखी। और गुप्त काल की शुरुआत के साथ, देश को मूर्तिकला ककी शास्त्रीय रूप में बदल दिया गया। भारत में गुप्त साम्राज्य ने मूर्तियों और स्मारकों के निर्माण के लिए अपनी शैली विकसित की। गुप्तकालीन मूर्तियों की इन विशेषताओं का तत्कालीन समकालीन कारीगरों द्वारा धार्मिक रूप से अनुसरण किया गया था। एलीफेंटा गुफा मंदिर और तमिलनाडु राज्य के कांचीपुरम में संरचनात्मक मंदिर गुप्त शासकों की स्थायी विरासत हैं।

## गुप्तकालीन मूर्तियों की विशेषताएं

गुप्त साम्राज्य भर में निर्मित सभी मूर्तियां अपेक्षाकृत समान `शास्त्रीय` शैली की उपस्थिति के लिए चिह्नित की जा सकती हैं। ऽ वीं शताब्दी के दौरान सांप मूर्तिकला की एक आवश्यक शैली बनाते हैं। इनके अलावा, गुप्त युग में टेराकोटा भी ध्यान देने योग्य हैं।

सबसे प्रतिष्ठित छवि सशस्त्र भगवान विष्णु की मूर्ति है। गुप्तोत्तर काल से संबंधित रॉक-कट मंदिरों की मूर्तिकला समान महत्व की है। गुप्त साम्राज्य की कला और वास्तुकला में गुप्त काल के दौरान धर्मनिरपेक्ष वास्तुकला, गुप्त काल की बौद्ध संरचनात्मक इमारतें और गुप्त युग की ब्राह्मणवादी वास्तुकला भी शामिल थी।

## गुप्त वंश की गुफा मूर्तियां

गुप्त काल को रॉक कट गुफाओं के लिए भी जाना जाता था। एलोरा की गुफाओं की मूर्तियां, एलिफेंटा की गुफाओं की मूर्तियां और अजंता की गुफाएं देखने लायक हैं। पूर्ण रूप से आरंभिक गुप्त शैली में गुप्तकालीन मूर्तियों के सबसे पुराने नमूने मध्य प्रदेश राज्य के विदिशा और उदयगिरि गुफाओं के हैं, जो पास में मौजूद हैं। इसका निर्माण ५ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मथुरा परंपरा में किया गया था।

## गुप्त वंश की मंदिर मूर्तियां

गुप्त शासकों की अवधि सार्वभौमिक उपलब्धि की आयु थी, एक शास्त्रीय युग, जैसा कि गोएत्ज़ के शब्दों में `जीवन का एक आदर्श, नायाब शैली' है। गुप्त शासन की अवधि के दौरान धार्मिक वास्तुकला काफी लोकप्रिय थी। इसलिए भारत में बौद्ध और जैन मंदिरों को पूरे साम्राज्य में खड़ा किया गया और महायान पैंथों की अधिक जटिल छवियां अस्तित्व में आईं। गुप्त काल की मूर्तिकला और मंदिर उनके उत्कृष्ट शिल्प कौशल को दर्शाते हैं।

मंदिरों में मूर्तिक तत्व थे जैसे कि `नागा' और `यक्ष' को दो महान आस्तिक पंथों के देवताओं के रूप में स्वतंत्र पंथ छवियों के रूप में प्रतिस्थापित किया गया था। यह शैली भारत के अन्य हिस्सों और दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में फैली हुई थी। मूर्तिकला की गुप्त शैली ने उत्तर भारतीय राज्यों की कला को बाद के दौर में भी बहुत प्रभावित किया है। इनके अलावा दशावतार मंदिर (देवगढ़) की मूर्ति, मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर में भितरगाँव मंदिर की मूर्ति, वैष्णवती तिगावा मंदिर और अन्य भी गुप्तकालीन मूर्तियों के कुछ उदाहरण हैं। गुप्त काल के दौरान अन्य स्थापत्य चमत्कारों में पार्वती मंदिर (नचना) की मूर्ति, शिव मंदिर की मूर्ति (भुमरा) और विष्णु मंदिर (तिगावा) की मूर्ति शामिल हैं।

गुप्त काल की मूर्तियां न केवल आने वाले समय के लिए भारतीय कला के मॉडल के रूप में बनीं, बल्कि उन्होंने सुदूर पूर्व में स्थित भारतीय उपनिवेशों के लिए आदर्श के रूप में भी काम किया। इस तरह की मूर्तियों ने मथुरा और गांधार जैसे प्रतिष्ठित कला शैलियों के प्रभाव को अपनी शैली में प्रदर्शित किया। गुप्त युग के दौरान सारनाथ के `स्थायी बुद्ध और

उत्तर प्रदेश में मथुरा के बैठे बुद्ध भी मूर्तिकला के अद्भुत नमूने हैं।

## गुप्त काल में साहित्य

गुप्तकाल में ही अधिकांश पुराणों का संकलन हुआ। प्रारम्भ में पुराण रचना से चारण लोग जुड़े हुए थे। उन चारणों में लोमहर्ष और उसके पुत्र उग्रसर्व प्रमुख हैं। अधिकांश पुराणों से वे जुड़े हुए थे, किन्तु आगे चलकर पुराण रचना का कार्य ब्राह्मणों के हाथों में चला गया।

गुप्त काल में संस्कृत भाषा और साहित्य का अप्रतिम विकास हुआ। संस्कृत का प्रयोग शिलालेख, स्तम्भलेख, दान-पत्र लेख आदि में हुआ। इसी भाषा में इस युग के महान् कवियों और साहित्यकारों ने अपनी अनेक कालजयी रचनाओं का प्रणयन किया।

इस काल में एक ओर प्रतिभाशाली सम्राट् हुए, तो दूसरी ओर कवि, गद्यकार, वैज्ञानिक एवं नाट्य ग्रन्थों के प्रणेता भी आविर्भूत हुए। गुप्तकालीन साहित्य को निम्नांकित कोटियों में विभाजित किया जा सकता है प्रशस्तियाँ, काव्यग्रन्थ, नाटक, नीतिग्रन्थ, स्मृतिग्रन्थ, कोश, व्याकरण, दर्शनग्रन्थ और विज्ञान।

### गुप्त काल की प्रमुख साहित्यिक रचनायें -

गुप्त काल को संस्कृत साहित्य का **स्वर्ण युग** माना जाता है। **बार्नेट** के अनुसार 'प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्त काल का वह महत्त्व है जो यूनान के इतिहास में पेरिक्लीयनयुग का है।' **स्मिथ** ने गुप्त काल की तुलना ब्रिटिश इतिहास के 'एलिजाबेथन' तथा 'स्टुअर्ट' के कालों से की है। गुप्त काल को श्रेष्ठ कवियों का काल माना जाता है। इस काल के कवि को दो भागों में बांटा गया है,-

- प्रथम भाग में वे कवि आते हैं जिनके विषय में हमें अभिलेखों से जानकारी मिलती है हालांकि इनकी किसी भी कृति के विषय में जानकारी नहीं है। इस श्रेणी में हरिषेण, शाव(वीरसेन), वत्सभट्टि और वासुल आते हैं।
- द्वितीय श्रेणी में वे कवि आते हैं जिनकी रचनाओं के बारे में हमें ज्ञान है, जैसे कालिदास, भारवि, भट्टि, मातृगुप्त, भर्तृश्रेष्ठ तथा विष्णु शर्मा आदि।

### हरिषेण

महादण्डनायक ध्रुवभूति का पुत्र हरिषेण **समुद्रगुप्त के** समय में सान्धिविग्रहिक कुमारामात्य एवं महादण्डनायक के पद पर कार्यरत था। हरिषेण की शैली के विषय में जानकारी 'प्रयाग स्तम्भ' लेख से मिलती है। हरिषेण द्वारा स्तम्भ लेख में प्रयुक्त छन्द कालिदास की शैली की याद दिलाते हैं। हरिषेण का पूरा लेख 'चंपू (गद्य-पद्य-मिश्रित) शैली' का एक अनोखा उदाहरण है। इनके द्वारा रचित **महाकाव्य** –

### शाव (वीरसेन)

**चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** के समय में सान्धिविग्रहिक अमात्य पद पर कार्यरत शाव की काव्य शैली के विषय में जानकारी एकमात्र स्त्रोत 'उदयगिरि गुफा की दीवार पर उत्कीर्ण लेख है। लेख के आधार पर यह माना जाता है कि शाव व्याकरण, न्याय एवं राजनीति का ज्ञाता एवं **पाटिलिपुत्र** का निवासी था।

### वत्सभट्टि

इनकी काव्य शैली के विषय में जानकारी मालव संवत के 'मंदसौर के स्तम्भ' लेख से मिलती है। इस लेख में कुल ५५ श्लोक हैं, जिनमें पहले तीन श्लोकों में सूर्य स्तुति की गई है।
वासुल ने मंदसौर प्रशस्ति की रचना यशोधर्मन के समय में की। कुल १ श्लोकों वाला यह लेख श्रेष्ठ काव्य का अनोखा उदाहरण है।

### कालिदास

संस्कृत साहित्य के इस महान कवि की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश महाकाव्य। कालिदास की सर्वोत्कृष्ट कृति उनका नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' है। इसके अतिरिक्त उन्होंने मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् नाटक की भी रचना की है।

### भारवि

**'किरातार्जुनीयम्' महाभारत** के वनपर्व पर आधारित है इसमे कुल 18 सर्ग है।

### भट्टि

इनके द्वारा रचित '**भट्टिकाव्य**' को 'रावणवध' भी कहा जाता है। **रामायण** की कथा पर आधारित इस काव्य में कुल 22 सर्ग तथा 1624 श्लोक हैं।

## गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

| नाटक | नाटक कार | नाटक का विषय |
|---|---|---|
| मालविकाग्निमित्रम् | कालिदास | अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है। |
| विक्रमोर्वशीयम् | कालिदास | सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है। |
| अभिज्ञानशाकुन्तलम् | कालिदास | दुष्यंत तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित |
| मुद्राराक्षसम् | विशाखदत्त | इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है। |
| देवीचन्द्रगुप्तम | विशाखदत्त | इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शाकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है। |
| मृच्छकटिकम् | शूद्रक | इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसंतसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वेश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है। |
| स्वप्नवासवदत्तम | भास | इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है। |
| प्रतिज्ञायौगंधरायणकम् | भास | महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है। |
| चारुदत्तम् | भास | इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है। |

### मातृगुप्त

इनके विषय में जानकारी कल्हण के राजतरंगिणी से मिलती है। संभवतः मातृगुप्त ने भरत के नाट्य-शास्त्र पर कोई टीका लिखी थी।

### भर्तृभेण्ठ

'हस्तिपक' नाम से भी जाने वाले इस कवि ने 'हयग्रीववध' काव्य की रचना की।

### विष्णु शर्मा

विष्णु शर्मा के द्वारा रचित काव्य 'पंचतंत्र' के विश्व की लगभग 50 भाषाओं में 250 भिन्न - भिन्न संस्करण निकल चुके हैं। पंचतंत्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ 'बाइबिल' के बाद दूसरे

# अध्याय – 3
# 1857 का स्वतंत्रता संग्राम

1857 का संग्राम ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़ी और अहम घटना थी। इस क्रांति की शुरुआत 10 मई, 1857 ई. को मेरठ से हुई, जो धीरे-धीरे कानपुर, बरेली, झांसी, दिल्ली, अवध आदि स्थानों पर फैल गई। क्रांति की शुरुआत तो एक सैन्य विद्रोह के रूप में हुई, लेकिन समय के साथ उसका स्वरूप बदल कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक जनव्यापी विद्रोह के रूप में हो गया, जिसे भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कहा गया।

- **कारण एवं परिणाम**

1857 ई .में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हई थी । भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

विद्रोह का स्वरूप

1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है । तो कुछ ने इसे दो धर्मो अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है । कुछ ने इसे स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम युद्ध बताया है सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लोरेन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी ।

## विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी । इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहां हम 1857 ई .के विद्रोह के महत्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे ।

## राजनीतिक कारण

अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया । धीरे-धीरे भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये। जिसके फलस्वरूप उनमें बडा असंतोष फेला, जिसका विस्फोट 1857 ई .के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

**(1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति**-:1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया । लार्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धान्त या हडप-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिये दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया । उसने 1856 ई .में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया उसने तंजोर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली ।मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना । सिक्को पर नाम गुदवाने जेसी परम्परा को डलहोजी द्वारा समाप्त करना । आदि घटनाओ ने 1857 के विद्रोह को हवा दी ।

**(2) मुगल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार** -:अंग्रेजों ने भारतीय शासको के साथ दुर्व्यवहार भी किया । उन्होंने मुगल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं लार्ड डलहौजी ने मुगल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने इंकार कर दिया और बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा ।

**(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य**-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेजअधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी

नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के सम्बन्ध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे |

**(4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असन्तोष** -:झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे। अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वृचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था । इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रान्ति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया ।

**(5) अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार** -:अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था | बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था । इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बडा असन्तोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

**(6) प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस -:** अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी । ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये । अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये ।

**(7) अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना-:** भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं। तुर्क, अफगान और मुगल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था। जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतएव भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी ।

**(8) उच्च वर्ग में असंतोष-:** देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ वरन् उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ |

**<u>प्रशासनिक कारण</u>-**

**(1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना-:** भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था । नई शासन-पद्धति को समझने मेंउन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे ।

**(2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति-:** अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई । लार्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्य कुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था । अत :उसने उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों को नियुक्त कर दिया । परिणामत : भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये । यद्यपि 1833 ई .के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आवश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धान्त का पालन नहीं किया । सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे | सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रूपये प्रति माह वेतन मिलता था | असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/ - रूपये प्रति माह वेतन मिलता था । उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

**(3) ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष-:** ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था | विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार पूरी तरह से नये थे। न्याय प्रणाली में अत्यधिक धन तथा समय नष्ट होता था और फिर भी निर्णय अनिश्चित था | भारतीय इस न्याय व्यवस्था को पसन्द नहीं करते थे । अगर एक छोटा सा किसान भी किसी जमींदार की शिकायत करता था तो जमींदार को न्यायालय में जाना पडता था । इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति अंग्रेजी न्यायालयों से असंतुष्ट थे ।

**(4) दोषपूर्ण भूराजस्व प्रणाली-:** भूराजस्व प्रणाली को नियमित करने के नाम पर अंग्रेजों ने अनेक जमींदारों के पट्टों की छानबीन की । जिन लोगों के

जायेगा । उसे भी भारतीयों ने ईसाई धर्म को प्रोत्साहित करने का साधन समझा ।

**(6) गोद-प्रथा का निषेध-:** डलहौजी ने हिन्दुओं को पुत्र गोद लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। लेकिन हिंदू धर्म शासन के अनुसार परलोक में शांति प्राप्त करने के लिए निःसन्तान व्यक्ति के लिए पुत्र को गोद लेना बहुत जरूरी समझा जाता था । अतएवं डलहौजी की इस नीति से भारतीयों में बड़ा असन्तोष फैला ।

**(7) जेलों में ईसाई धर्म का प्रसार-:** अंग्रेजों ने स्कूलों के साथ-साथ जेलों को भी ईसाई धर्म प्रसार का साधन बनाया था । जेल में प्रतिदिन सुबह एक ईसाई अध्यापक ईसाई धर्म की शिक्षा देता था। 1845 ई .मे एक नये नियम के अन्तर्गत जेल में सभी कैदियों का भोजन एक ब्राह्मण व्यक्ति के द्वारा सामूहिक रूप से बनाया जाना शुरू किया गया । उस समय एक प्रत्येक कैदी अपना भोजन स्वयं बनाता था । इस नये नियम से प्रत्येक कैदी को अपनी जाति खो देने का डर लगा क्योंकि अन्तर्जातीय खान-पान को हिन्दू स्वीकार नहीं करते थे । जेल से छूटे हुए व्यक्ति को हिन्दू परिवार में शामिल नहीं करते थे।

## तात्कालिक कारण

उपरोक्त विवरण से प्रकट होता है कि भारतीय सैनिक न केवल उन सभी बातों से असन्तुष्ट थे जिनसे भारतीय नागरिक असन्तुष्ट थे बल्कि उनके असन्तोष के कुछ अलग कारण भी थे । अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना सैनिकों में आ चुकी थी )उसे केवल एक चिंगारी की जरूरत थी और वह चिंगारी चर्बी लगे हुए कारतूसों ने प्रदान कर दी ।

1856 ई में भारत सरकार ने पुरानी बन्दूको को हटाकर नयी 'एनफील्ड राइफल' को सेना में प्रयोग करना चाहा | उसके लिए जो कारतूस बनाये गये थे उन्हें बन्दूक में भरने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था । इन राइफलों के कारतूसों को चिकना बनाने में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग होता था । यद्यपि अंग्रेज अधिकारियों ने इस बात को नही माना लेकिन सैनिकों को उन पर विश्वास नहीं हुआ | यह भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावनाओं की सूर अवहेलना थी । उन्हें यह विश्वास हो गया कि अंग्रेज हिन्दू और मुसलमान दोनों का ही धर्म भ्रष्ट करना चाहते है । अत :उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने के बजाय ऐसे दूषित शासन का अन्त कर देना ही उचित समझा । इस प्रकार, कारतूसों की घटना 1857 ई . के विद्रोह का मुख्य कारण बनी । सैनिकों की सफलता ने भारतीय नागरिकों को भी विद्रोह करने के लिए तैयार कर दिया ।

## विद्रोह का प्रारम्भ एवं प्रसार

सर्वप्रथम क्रांति की शुरुआत कलकत्ता के पास बैरकपुर छावनी में हुई । यहां के सैनिकों ने नए कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार कर विद्रोह का झण्डा खडा कर दिया। 29 मार्च, 1857 ई .को एक ब्राह्मण सैनिक मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग की आज्ञा से नाराज होकर अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर कुछ अंग्रेज सैनिक अधिकारियों को मार डाला | परिणाम स्परूप मंगल पाण्डे तथा उसके सहयोगियों को फांसी की सजा दे दी गई । उसके बाद 19 तथा 34 नम्बर की देशी पलटने समाप्त कर दी गई | बैरकपुर की छावनी की घटना के बाद मेरठ में भी विद्रोह शुरू हो गया | सैनिकों ने कारागह से बन्दी सैनिकों को मुक्त करा लिया तथा कई अंग्रेजों का वध कर दिया गया | मेरठ से यह क्रांतिकारी दिल्ली की ओर रहाना हुए |

## दिल्ली

11 मई 1857 ई .को मेरठ के विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुंचे उस समय दिल्ली में कोई अंग्रेज पलटन नहीं थी । विद्रोहियों का दिल्ली के भारतीय सैनिकों ने स्वागत किया और वे भीड़ के साथ शामिल हो गये । जैसे ही उन्होंने अपने सभी अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी । विद्रोहियों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और बहादुर शाह द्वितीय को नेतृत्व स्वीकार करने की अपील की । मुगल बादशाह ने संकोच किया तथा मेरठ के विद्रोह और विद्रोहियों के दिल्ली पहुंचने की सूचना आगरा में लेफ्टिनेंट गवर्नर को भिजवाई । लेकिन अंत मे विवश होकर उन्होंने क्रांतिकारियों का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया । अंग्रेज दिल्ली से भाग गये और दिल्ली पर मुगल सम्राट बहादुर शाह की पताका फहराने लगी | मुगल शहजादों मिर्जा मुगल, मिर्जा खिजिर, सुल्तान और

मिर्जा अबू बकर ने संयोग से प्राप्त इस अवसर से पूरा-पूरा लाभ उठाया । उन्हें लगा कि यह उनके वंश के पुराने गौरव को पुन :प्रतिष्ठित करने का मौका है । मेरठ में विद्रोह और दिल्ली पर अधिकार की खबर पूरे देश में फैल गई और कुछ ही दिनों में उत्तर भारत के अधिकांश भागों में क्रांति का प्रसार हो गया।

**अवध**

मेरठ की घटनाओं की सूचना 14 मई को और दिल्ली पर क्रांतिकारियों के अधिकार की खबर 15 मई को लखनऊ पहुंची । उस समय सर हेनरी लारेंस वहां का चीफ कमिश्नर था । उसने विद्रोह के संकट से बचने के लिए आवश्यक प्रयास किये लेकिन लखनऊ में भी विद्रोह को लम्बे समय तक टाला नहीं जा सका । 30 मई को लखनऊ से कुछ मील दूर मुरिआव छावनी में देशी सिपाहियों ने यूरोपीय फौज पर सशस्त्र हमला कर दिया । इसमें कुछ लोगों की जान गई । विद्रोह लखनऊ तक ही सीमित नहीं रहा । जल्द ही यह सीतापुर, फैजाबाद, बनारस, इलाहाबाद, आजमगढ़, मथुरा, मैनपुरी, अलीगढ़, बुलन्दशहर, आगरा, बरेली, फर्रुखाबाद, बिन्नौर, शाहजापुर, मुज्जफरनगर, बदायूँ, दानापुर आदि क्षेत्र में, जहां भारतीय सैनिक तैनात थे, वहाँ फैल गया । सेना के विद्रोह करने से पुलिस तथा स्थानीय प्रशासन भी तितर-बितर हो गया। जहां भी विद्रोह भड़का सरकारी खजाने को लूट लिया गया और गोले-बारूद पर कब्जा कर लिया गया । बैरकों, थानो राजस्व कार्यालयों को जला दिया गया, कारागार के दरवाजे खोल दिये गये । गाद के किसानों तथा बेदखल किये गये जमींदारों ने साहूकारों एवं नये जमींदारों, जिन्होंने उन्हे बेदखल किया था हमला कर दिया । उन्होंने सरकारी दस्तावेजों तथा साहूकारों के बही खातों को नष्ट कर दिया अथवा लूट लिया । इस प्रकार क्रांतिकारियों ने औपनिवेशिक शासन के सभी चिन्हों को मिटाने का प्रयास किया । जिन क्षेत्रों के लोगों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया उनकी सहानुभूति भी विद्रोहियों के साथ थी।

**कानपुर**

5 जून 1857 ई .को कानपुर में विद्रोह हुआ। कानपुर में क्रांति का नेतृत्व नाना साहब ने किया। उन्होंने 26 जून को कानपुर पर अधिकार स्थापित कर लिया और स्वयं को पेशवा घोषित कर दिया। बहादुर शाह को नाना ने भी भारत का बादशाह मान लिया था । कानपुर के अंग्रेज सेनापति कीलर को नाना साहब ने आत्म-समर्पण करने पर बाध्य कर दिया ।

जुलाई 1857 में हैवलाक ने कानपुर पर आक्रमण कर दिया और घोर संघर्ष के बाद कानपुर पर अधिकार कर लिया। नवम्बर 1857 में ग्वालियर के 20,000 क्रांतिकारी सैनिकों ने तात्या टोपे के नेतृत्व में कानपुर पर आक्रमण कर दिया और वहाँ पर सेनापति विडहम को पराजित करके 28 नवम्बर को कानपुर पर पुन :प्रभुत्व स्थापित कर लिया । दुर्भाग्यश दिसम्बर 1857 को कैम्पबैल ने क्रांतिकारियों को बुरी तरह पराजित किया और कानपुर पुन :अंग्रेजों केर हाथ में आ गया। नाना साहब वहां से नेपाल चले गये ।

**झांसी**

झांसी में विद्रोह का प्रारम्भ 5 जून 1857 को हुआ। रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने बुन्देलखण्ड तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। बुन्देलखण्ड में विद्रोह के दमन का कार्य ह्यूरोज नामक सेनापति को सोपा गया था । उसने 23 मार्च 1857 को झांसी का घेरा डाल दिया । एक सप्ताह तक युद्ध चलता रहा लक्ष्मीबाई के मोर्चा सभालने बालों में सिर्फ ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही नहीं थे कोली, काछी और तेली भी थे ये महाराष्ट्रीय और बुन्देलखण्डी थे ये पठान तथा अन्य मुसलमान थे । पुरुषों के साथ हर मोर्चे पर महिलाएं भी थी । झांसी की सुरक्षा असंभव समझकर लक्ष्मीबाई 4 अप्रैल 1858 को अपने दत्तक पुत्र दामोदर को पीठ से बांधकर एक रक्षक दल के साथ शत्रु सेना को चीरती हुई कालपी पहुंची। तात्या टोपे, बांदा के नबाव बाणपुर तथा शाहगढ़ के राजा व अन्य क्रांतिकारी नेता भी कालपी विद्यमान थे । यहां ह्यूरोज के साथ भयंकर युद्ध हुआ जिसमें विजय अंग्रेजों को मिली । मई 1858 को रानी ग्वालियर पहुंची। सिंधिया अंग्रेजों का सर्थक था किन्तु उसकी सेना विद्रोहियों के साथ हो गई । जिसकी सहायता से रानी ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया और ग्वालियर की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुई।

**बिहार**

बिहार में जगदीशपुर के जमींदार कुंवरसिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया था । उस समय उनकी आयु 70

साल थी | कुंवरसिंह को अंग्रेजों ने दिवालिएपन के कगार पर पहुंचा दिया था। यद्यपि उन्होंने खुद किसी विद्रोह की योजना नहीं बनाई थी । लेकिन विद्रोही सैनिकों की टुकड़ी दीनापुर से आरा पहुंचने पर कुंवरसिंह उनके साथ मिल गये । जुलाई 1857 में उन्होंने आरा पर अधिकार कर लिया | मार्च 1858 में उन्होंने आजमगढ़ पर अधिकार जमाया । यह उनकी सबसे बड़ी सफलता थी | 22 अप्रेल 1858 ई को उन्होंने अपने जागीर जगदीशपुर पर पुन : अधिकार कर लिया । अन्त में उनकी जागीर में ही अंग्रेजों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया और वह संघर्ष करते हुए मारे गये । उनकी मृत्यु के समय जगदीशपुर पर आजादी का झण्डा फहरा रहा था । सम्पूर्ण भारत के विद्रोह में कुंवरसिंह ही एक ऐसे वीर थे जिन्होंने अंग्रेजों को अनेक बार हराया |

**राजपूताना**

राजपूताना में 28 मई 1857 को नसीराबाद छावनी में तथा 3 जून 1857 को नीमच में विद्रोह हुआ लेकिन विद्रोह का मुख्य केन्द्र कोटा और आउवा थे । कोटा मे विद्रोह का नेतृत्व मेहराब खां और लाला जयदयाल ने किया । कोटा में क्रांति का महत्व अपेक्षाकृत ज्यादा माना जाता है ,क्योंकि लगभग छ :महीनों तक कोटा पर क्रांतिकारियों का अधिकार रहा । समस्त जनता क्रांति की समर्थक बन गई थी । विद्रोहियों का लक्ष्य मुख्यत :सरकारी सम्पत्ति और सरकारी बंगले को नुकसान पहुंचाना था । मेहराब खाँ और जयदयाल के नेतृत्व में छ :महीने तक फौज ने इच्छानुसार शासन चलाया | अंग्रेजों के अनेक समर्थकों को तोपों के मुंह पर बांधकर उडा दिया गया । अंग्रेजों को इस विद्रोह को कुचलने के लिए विशेष सेना भेजनी पड़ी | महाराव की स्वामी भक्त सेना करौली की सेना, गोटेपुर की फौज ने भी इस ब्रिटिश सेना का सहयोग किया। लंबे संघर्ष के बाद 30 मार्च 1858 को कोटा पर पुन :अंग्रेजों का अधिकार हो गया| मेहराव खां और लाला जयदयाल पर मुकदमा चलाने का दिखावा कर उन्हें फांसी पर लटका दिया गया ।

जोधपुर के एरनपुरा में हुए विद्रोह में आउवा के ठाकुर कुशलसिंह चम्पावत तथा मेवाड़ एवं मारवाड के कुछ जागीरदार शामिल हुए । जोधपुर के शासक द्वारा किलेदार अनाडसिंह के नेतृत्व में भेजी गई सेना को क्रांतिकारियों ने पराजित कर दिया । 18 सितम्बर 1857 को क्रांतिकारियों व जोधपुर के पोलिटिकल एजेन्ट कैप्टन मैसन एवं ए.जी.जी लारेंस के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना में युद्ध हुआ| जिसमें ए.जी.जी . की सेना बुरी तरह परास्त हुई । आउवा के क्रांतिकारी नेताओं का संघर्ष दिल्ली से था और मारवाड की जनता की सद्भावना उनके साथ थी। 10 अक्टूबर 1857 को जोधपुर लीजियन के फौजी तथा कुशलीसंह के कई सहयोगी ठाकुर दिल्ली की ओर रवाना हुए । दिल्ली जाने का उद्देश्य यह था कि वे बहादुरशाह जफर का फरमान प्राप्त कर उसकी सैनिक सहायता से मारवाड़ तथा मेवाड को अंग्रेजी आधिपत्य से मुक्त कराना चाहते थे ।

**पंजाब**

पंजाब के सिख राजाओं के विद्रोह में शामिल न होने के बारे में विद्वानो में एक मत नहीं है । वैसे ज्यादातर सिख राजाओं ने क्रांतिकारियों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई थी | पंजाब के इस विद्रोह में भाग न लेने का एक मुख्य कारण पंजाबी सैनिकों की सहायता से नई सेनाओं का गठन होना था | इस भर्ती में पठानों एवं उत्तर पश्चिमी सीमा के लोगों को ज्यादा मौका दिया गया । इससे पंजाब में भंग किये गये देशी सैनिकों के सामने अंग्रेजी सेना में भर्ती का आकर्षण भी उत्पन्न हो गया था ।

पंजाब को 1848 में ही अंग्रेजी राज्य में मिलाया गया था और यह युद्ध प्रिय लोगों का घर था । किन्तु यहां के लोग आपस में बंटे हुए थे और उनकी ईषाभरी प्रतिद्वंदिता के कारण शासकों ने स्वयं को सुरक्षित समझा । अंग्रेजी प्रशासन का उद्देश्य था - दो वर्गो का एक-दूसरे के द्वारा नियंत्रण में रखना, एक जाति को दूसरी जाति के साथ और एक मत को दूसरे मत के विपरीत संतुलित करते रहना ।

प्रसार व्यापक रूप से नहीं हुआ |

## 1857 ई के विद्रोह के परिणाम

यद्यपि 1857 ई .का विद्रोह असफल रहा परन्तु उसके परिणाम अत्यन्त व्यापक और स्थायी सिद्ध हुए| कहा गया कि सन् 1857 के महान् विस्फोट से भारतीय शासन के स्वरूप और सेना के माही विकास में मौलिक परिवर्तन आया । विद्रोह के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित थे-

# मारवाड़ का इतिहास

## राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था ।

| शाखा | स्थापना | संस्थापक |
|---|---|---|
| 1. मारवाड़ (जोधपुर) | 1240 ई. | राव सीहा |
| 2. बीकानेर | 1465 ई. | राव बीका |
| 3. किशनगढ़ | 1609 ई.- | किशनसिंह |

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

### उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है ।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं । ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

### मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं । मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिदमल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

**चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !**
**जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।**

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

**आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ है साथ ।**
**बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।**
**पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।**
**भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।**
**दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।**

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष

की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।

- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

**महत्वपूर्ण तथ्य -**

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का संस्थापक / राठौड़ वंश का आदि पुरूष कहा जाता हैं।
- राव सीहा पुरस्कार मारवाड़ फाउण्डेशन द्वारा दिया जाता हैं। 2012-13 का राव सीहा पुरस्कार विजयदान देथा को तथा 2013-14 का राव सीहा पुरस्कार डॉ. दलबीर भण्डारी को दिया गया हैं।
- विजयदान देथा इन्हें बिज्जी नाम से जाना जाता हैं। इनका जन्म बोरंदा, जोधपुर में हुआ। इन्हें राजस्थान का शेक्सपीयर कहा जाता हैं।
- बातां री फुलवारी (14 खण्ड), अलेखूं हिटलर, बापू के तीन हत्यारे, दुविधा उपन्यास (इस पर पहेली फिल्म बनी) लिखा। 2012-13 का राव सीहा पुरस्कार इन्हें दिया गया तथा राजस्थान का सर्वोच्च असैनिक सम्मान राजस्थान रत्न से भी इन्हें नवाजा गया हैं।
- दलबीर भण्डारी जोधपुर में जन्में डॉ. दलबीर भण्डारी वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग, नीदरलैण्ड में न्यायाधीश के पद पर कार्यरत हैं ।
- मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक, तथा मारवाड़ के राठौड़ों का संस्थापक या आदि पुरुष भी कहा जाता हैं ।
- राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वती थी ।
- 13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बर्बाद कर दिया तो राव सीहा मारवाड़ चला आया ।
- राव सीहा ने सर्वप्रथम पाली (वर्तमान) के निकट अपना साम्राज्य स्थापित किया ऐसा कहते हैं, कि उन्होंने पाली के पालीवाल ब्राह्मणों को मेर व मीणाओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाई उनकी रक्षा की तथा उसके पश्चात् उनके आग्रह पर वहीं आकर बस गया ।
- पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती हैं । इस लेख के अनुसार सीहा सेत कुँवर का पुत्र था । उसकी पत्नी पार्वती ने उसकी मृत्यु पर इस देवल का निर्माण करवाया था । इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गाँव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी । इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया हैं । इस लेख से प्रमाणित होता हैं कि इस समय राठौड़ों का राज्य विस्तार पाली के आसपास ही सीमित था ।
- राव सीहा के पश्चात् उनका पुत्र आसनाथ गद्दी पर बैठा ।

**आसनाथ ( 1273 – 1291 ई.)**

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

**राव चूँडा (1383 – 1423)**

- राव चूँडा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँडा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं । अपने पिता की मृत्यु के समय चूँडा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँडा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी ।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँडा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँडा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।

- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया ।
- राव चूँड़ा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया ।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

**राव मल्लिनाथ**

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

**कान्हा (1423 – 1427)**

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

**राव रणमल, - ( 1427 – 1438)**

राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था ।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया ।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की ।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।
- रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।
- रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।
- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ ।

**राव जोधा (1438 – 1489)**

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था ।
2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली ।
3. चूँड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया ।
4. राव जोधा ने 1453 ई. में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया ।
5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया /
6. राव जोधा ने 1459 ई. में चिड़ियाटुक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया /
7. दुर्ग के निर्माण के पश्चात् राव जोधा ने अपनी राजधानी मण्डौर से जोधपुर स्थानातंरित की ।
8. राव जोधा ने लगभग 50 वर्ष तक शासन किया ।
9. इसी समय इनकी एक रानी हाड़ी जसमा देवी ने किले के पास 'रानीसर' तालाब बनवाया ।
10. राव जोधा ने अपनी हाड़ी रानी जसमा देवी के मोह में पड़कर उसके पुत्र सातलदेव को अपना उत्तराधिकारी बनाया, जबकि हकदार राव बीका था यहीं से उत्तराधिकार को लेकर कलह का बीज पड़ गया ।
11. राजा जोधा की मृत्यु 1489 ई. में हुई ।

**हनुमंत सिंह**

एकीकरण के समय जोधपुर का शासक हनुमंत सिंह था ।

- हनुमंत सिंह ने एकीकरण विलयपत्र पर हस्ताक्षर करते समय रियासती विभाग के सदस्य सचिव बी पी. मेनन के कनपटी पर पिस्तौल तान दी थी ।
- एकीकरण के समय राज्य के क्षेत्रफल में सबसे बडी रियासत जोधपुर थी ।
- मारवाड़ रियासत राजस्थान की एकमात्र ऐसी रियासत थी जिसे मुगलों ने दो बार खालसा घोषित किया था
- प्रथम बार चंद्र सिंह की मृत्यु पर 'अकबर' द्वारा ।
- दूसरी बार जसवन्त सिंह की मृत्यु पर 'औरंगजेब' के द्वारा की गई ।

## 'कच्छवाहा' वंश

- कच्छवाहा' अपने आपको भगवान श्री राम के पुत्र कुश' की संतान मानते हैं।
- संस्थापक दुलहराय (तेजकरण), मूलतः ग्वालियर निवासी था। 1137 ई. में उसने बड़गुर्जरों को हराकर नवीन ढूँढाड़ राज्य की स्थापना की।
- दुलहराय के वंशज कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणाओं से आमेर जीतकर अपनी राजधानी बनाया, जो 1727 ई. तक कच्छवाहा वंश की राजधानी रहा।
- इसी वंश के शेखा ने शेखावटी में अपना अलग राज्य बनाया।

**कछवाहा वंश के प्रमुख शासक**

**पृथ्वीसिंह**

- यह आमेर का पहला शक्तिशाली शासक था। 1527 में खानवा के युद्ध में पृथ्वीराज राणा साँगा की तरफ से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है, इस समय पृथ्वीराज की पत्नी बालाबाई अपने छोटे पुत्र पूरणमल का राज्याभिषेक करवाती है, जिसके कारण पृथ्वीराज का बड़ा पुत्र भीमसिंह नाराज हो जाता है।
- भीमदेव 1533 में पूरणमल को परास्त करके स्वयं शासक बनता है, 1536 में भीमदेव की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र रतन सिंह शासक बनता है, रतन सिंह से उसका चाचा साँगा शत्रुता रखने लग जाता है, साँगा ने बीकानेर के राव जैतसी के साथ मिलकर रतन सिंह से उसका मोजमाबाद वाला क्षेत्र छीनकर साँगानेर बसाता है, साँगा की मृत्यु के पश्चात उसका छोटा भाई भारमल रतन सिंह से शत्रुता रखने लग जाता है । भारमल ने रतन सिंह के छोटे भाई आसकरण को अपने पक्ष में मिलाते हुए आसकरण के माध्यम से रतन सिंह की हत्या करवा देता है और आसकरण को कुछ समय के लिए शासक बनाता है भारमल जून 1547 में आसकरण को हटाते हुए स्वयं शासक बन जाता है।
- रानी बालाबाई ने गलता में कृष्णदास पयहारी संप्रदाय को संरक्षण दिया था।

**भारमल (1547-1574 ई.)**

- भारमल (1547-1574 ई.) या बिहारीमल 1547 ई. में भारमल आमेर का शासक बना।
- भारमल प्रथम राजस्थानी शासक था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की व 1562 ई. में अपनी पुत्री हरखाबाई उर्फ मानमति या शाही बाई (मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर से किया।
- मुग़ल बादशाह जहाँगीर हरखाबाई का ही पुत्र था।

**अकबर और राजस्थान यात्रा :-**

- अकबर ने अपने जीवन में पहली बार यात्रा के लिए 1562 में राजस्थान आता है यहीं उसकी राजस्थान की पहली यात्रा थी इस यात्रा का उद्देश्य अजमेर स्थित ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत करना था।
- इस यात्रा के दौरान आमेर का शासक भारमल सांभर के निकट अकबर से सामेला प्रक्रिया से मुलाकात करते हुए अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तथा अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखता है।

**जोधा अकबर विवाह :-**

- अजमेर से लौटता हुआ अकबर 10 जनवरी 1562 को भारमल की पुत्री जोधाबाई / हरकाबाई के साथ विवाह करता है ।
- जोधा अकबर विवाह पहला राजपूत मुग़ल विवाह सम्बन्ध था।
- भारमल पहला राजपूत था जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी।

- **मेव** :-रणबाजा, रतदई नृत्य ।
- **रेबारी** :-गैर, लूम्बर नृत्य ।
- **सहरिया** :-लहँगी, शिकारी नृत्य ।
- **भील-मीणा** :-नेजा नृत्य ।
- **कंजर** –घोड़ी. लहरी, चकरी. धाकड़ नृत्य ।
- **गुर्जर** :-चरी नृत्य ।
- **कालबेलिया** :-शंकरिया. पणीहारी. बागडिया, इण्डोणी नृत्य ।

### I. राजस्थान का क्षेत्रीय लोकनृत्य

- **ढोल नृत्य** –राजस्थान के जालोर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं। यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं। ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।
- **बिंदौरी नृत्य** –राज्य के झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह के अवसर पर गैर के समान किया जाने वाला लोकनृत्य, जिसमें पुरुष भाग लेते हैं।
- **चंग नृत्य** –शेखावाटी क्षेत्र में होली के समय पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक लोकनृत्य, जिसमें प्रत्येक पुरुष चंग की थाप पर गाते हुए नाचते हैं।
- **गींदड़** – शेखावाटी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित लोकनृत्य, जो होली से पूर्व 'डांडा रोपण' से प्रारम्भ होकर होली के बाद तक चलता है। गींदड़ नाचने वालों को 'गींदड़िया' तथा स्त्रियों का स्वांग करने वालों को 'गणगौर' कहा जाता है। नृत्य में विभिन्न प्रकार के स्वांग करते हैं जिसमें सेठ-सेठानी, दूल्हा दुल्हन, डाकिया-डाकिन, पठाः व सरता के स्वांग प्रमुख हैं।
- **अग्नि नृत्य** – बीकानेर के जसनाथी सिद्धों द्वारा 'फतैं-फतैं' के उद्घोष के साथ तपते अंगारों पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों (भक्तों) को रोमांचित कर देता है । यह नृत्य फाल्गुन-चैत्र के महीनों में किया जाता है। इस अवसर पर नगाड़ा वाद्य यंत्र बजता है और नृतक मतीरा फोड़ना, हल जोतना आदि क्रियाएँ करते हैं।
- **बम नृत्य** – भरतपुर-अलवर क्षेत्र में होली के अवसर पर नई फसल आने की खुशी में किया जाने वाला नृत्य जिसमें बड़े नगाड़े (बम) की ताल पर पुरुष तीन वर्गों में बँटकर नाचते हैं।
- ढप नृत्य – बसंत पंचमी पर शेखावटी क्षेत्र में ढप व मंजीरे बजाते हुए किया जाने वाला नृत्य ढप नृत्य कहलाता है ।
- मारवाड़ का डांडिया नृत्य – यह मारवाड़ का प्रतिनिधि नृत्य है, जिसमें 10 – 15 पुरुष विभिन्न प्रकार की वेशभूषा में स्वांग भरकर गोले में डंडियों को आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं ।
- बिंदौरी नृत्य – झालावाड़ का प्रमुख नृत्य जो गैर शैली का नृत्य है एवं होली या विवाहोत्सव पर किया जाता है ।

### अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय लोकनृत्य

- **लांगुरिया**–कैलादेवी के में ले में।
- **डांग** – नाथद्वारा में होली के अवसर पर।

### 2. राजस्थान के व्यावसायिक लोकनृत्य

- **भवाई** – यह उदयपुर क्षेत्र की भवाई जाती का नृत्य है जो एक व्यवसाय नृत्य है ।इस नृत्य में नर्तक द्वारा सिर पर बहुत से घड़े रखकर विविध मनोरंजक एवं रोमांचक क्रियाएँ की जाती हैं। भवाई में वोरा वोरी, सूरदास, शंकरिया, ढोलामारू इत्यादि प्रसंग होते हैं।
- पुष्पा व्यास भवाई नृत्य की पहली महिला कलाकार थी ।
- रूपसिंह शेखावत, दयाराम, तारा शर्मा और श्रेष्ठा सोनी राजस्थान में इसके प्रसिद्ध नर्तक हैं ।
- **तेरहताली**—पाली, नागौर एवं जैसलमेर जिले की कामड़ जाति की विवाहित महिलाओं द्वारा रामदेवजी के मेले में किया जाता है । जिसमें नृत्यांगना दायें पाँव पर नौ एवं प्रत्येक हाथ की कोहनी के एक-एक मंजीरे बाँधकर तथा दो मंजीरे हाथों में रखकर कुल तेरह मंजीरे परस्पर टकराते हुए विविध ध्वनियाँ उत्पन्न करती हैं। इस नृत्य में पुरुष तम्बूरा, ढोलक इत्यादि वाद्य यंत्र बजाते हैं। इस नृत्य का उद्गम स्थल पाली जिले का पादरला गाँव माना जाता है। कामड़ जाति की विवाहित महिलाएं ही इस नृत्य को कर सकती हैं। माँगी बाई, मोहनी व नारायणी इसकी प्रसिद्ध कलाकार हैं।
- **कच्छी घोड़ी** –शेखावाटी क्षेत्र एवं नागौर जिले के पूर्वी भाग में अधिक प्रचलित है । यह नृत्य सरगड़ा जातियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों पर किया जाता है। इसमें नर्तक बांस की घोड़ी को अपनी कमर में बाँधकर, आकर्षक नृत्य करता है

# राजस्थान का भूगोल

## अध्याय – I

## स्थिति एवं विस्तार

**राजस्थान की स्थितिः-** *प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।*

*(I) राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर:- पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा –*

*(क)अंगारा लैंड / यूरेशियल प्लेट*

*(ख)गोंडवाना लैंड प्लेट*

*(ग) टेथिस सागर*

*(घ) पेंजिया*

*(ङ) पेंथाल्जा*

*नोटः- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि – आज से लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी दो भागों में विभाजित थी।*

*1.स्थल*

*2.जल*

*जैसा कि आज भी दिखाई देता है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित दिखाई देता है, जैसे सात महाद्वीप अलग - अलग हैं। उनके भी कई देश एक - दूसरे से काफी अलग अलग है। लेकिन लाखों – करोड़ों वर्ष पूर्व संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था। इसी स्थलीय क्षेत्र को "पेंजिया" के नाम से जानते थे तथा शेष बचे हुए भाग को (जल वाले क्षेत्र को) "पेंथाल्जा" के नाम से जानते थे। नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-*

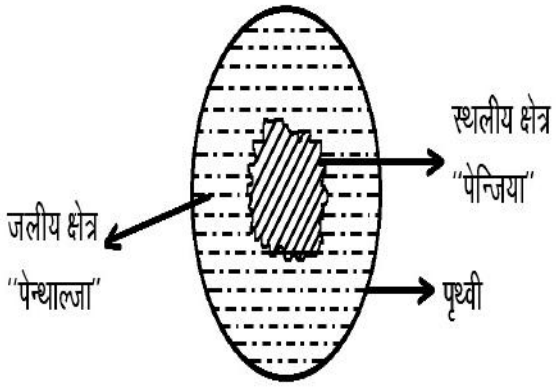


*प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पेंजिया (स्थलीय क्षेत्र) दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ। इस स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड /यूरेशियन प्लेट" के नाम से जानते हैं।*

*इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "गोंडवाना लैंड"'प्लेट' के नाम से जानते हैं।*

*दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-*

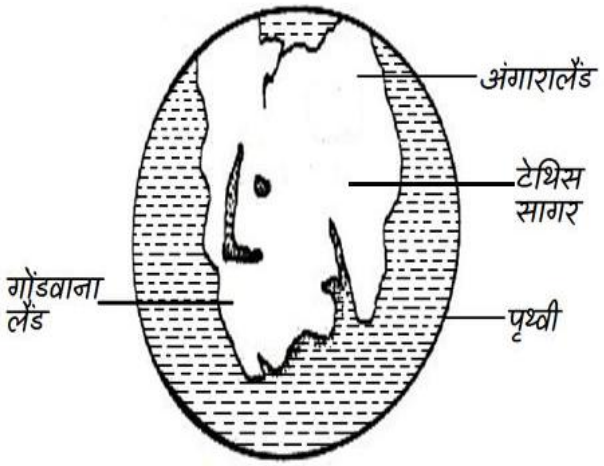

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के चार राज्य स्थित हैं।

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी.)
2. पंजाब (547 कि.मी.)
3. राजस्थान (1070 कि.मी.)
4. गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा - राजस्थान (1070 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात(512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय - श्रीनगर

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय - जयपुर

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य - राजस्थान

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य - पंजाब

रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा 1070 कि.मी. है। जो राजस्थान के चार जिलों से लगती है।

1. श्रीगंगानगर-210 कि.मी.
2. बीकानेर-168 कि.मी.
3. जैसलमेर- 464 कि.मी.
4. बाड़मेर- 228 कि.मी.

रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के हिंदुमल कोट से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के शाहगढ़ बाखासर गाँव तक विस्तृत है।

रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा - बहावलपुर

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान के सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत

2. सिंध प्रांत

रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा हैं।

राजस्थान से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा बीकानेर (168 कि.मी.) की रेडक्लिफ रेखा से लगती हैं।

रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय -श्रीगंगानगर

रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर

रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर

रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला - श्रीगंगानगर

राजस्थान के केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 2 (बीकानेर, जैसलमेर)

राजस्थान के परिधिय जिले - 25

राजस्थान के अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिले - 23

राजस्थान के केवल अंतर्राज्यीय सीमा वाले जिले - 21

राजस्थान के 2 ऐसे जिले हैं जिनकी अन्तर्राज्नीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा हैं –

1. श्रीगंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब),
2. बाड़मेर (पाकिस्तान +गुजरात)

राजस्थान के 4 जिले ऐसे हैं जिनकी सीमा दो – दो राज्यों से लगती हैं-

हनुमानगढ़ :- पंजाब + हरियाणा

भरतपुर :- हरियाणा + उतरप्रदेश

धौलपुर :- उत्तरप्रदेश + मध्यप्रदेश

बाँसवाड़ा :- मध्यप्रदेश + गुजरात

### पंजाब (89 किमी०)

राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती हैं तथा पंजाब के दो जिले फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती हैं । पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती हैं। पंजाब सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ हैं। पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला श्रीगंगानगर व छोटा जिला हनुमानगढ़ हैं।

### हरियाणा (1262 किमी०)

राजस्थान के 7 जिलों की सीमा हरियाणा के 7 जिलों सिरसा, फतेहबाद, हिसार, भिवाणी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात से लगती हैं। हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा हनुमानगढ़ व न्यूनतम सीमा जयपुर की लगती हैं । तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ व दूर मुख्यालय जयपुर का हैं। हरियाणा सीमा पर

# अध्याय – 7

# पशुपालन

## राजस्थान में 20 वीं पशुगणना

20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में कुल पशुधन 56.8 मिलियन (5.68 करोड़) है। जो कि 2012 की 577.32 लाख (5.77 करोड़) था। इस प्रकार 2019 में कुल पशुओं की संख्या में लगभग 1.66 प्रतिशत की कमी देखी गई है।

राजस्थान 568 लाख पशुओं के साथ भारत में दूसरे स्थान पर है। पहला स्थान उत्तर प्रदेश का है।

राजस्थान गौवंश के मामले में 2012 के 133 लाख की तुलना में 2019 में 139 लाख पशुओं के साथ छठे स्थान पर है। गोवंश में 4.41% की वृद्धि हुई है।

राजस्थान भैंसो के मामले में 2012 के 130 लाख की तुलना में 2019 में 137 लाख पशुओं के साथ दूसरे स्थान पर है। भैंसों में 5.53% की वृद्धि हुई है।

राजस्थान भेड़ की संख्या के मामले में 2012 के 9.1 मिलियन की तुलना में 2019 में 79 लाख पशुओं के साथ चौथे स्थान पर है। भेड़ में 12.95% की कमी हुई है।

राजस्थान बकरी के मामले में 2012 के 216.7 लाख की तुलना में 2019 में 208.4 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। बकरियों की संख्या में 3.81% की कमी हुई है।

राजस्थान ऊँट के मामले में 2012 के 326लाख की तुलना में 2019 में 213 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। ऊंटों की संख्या में 34.69% की कमी हुई है।

राजस्थान घोड़ों के मामले में 2012 के 38 लाख की तुलना में 2019 में 34 लाख पशुओं के साथ तीसरे स्थान पर है। घोड़ों की संख्या में में 10.85% की कमी हुई है।

राजस्थान गधों के मामले में 2012 के 81 लाख की तुलना में 2019 में 23 लाख पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। गधों में 71.31% की कमी हुई है।

| पशु | कुल संख्या ( लाख ) | अधिकतम | न्यूनतम |
|---|---|---|---|
| बकरी | 208.4 | बाड़मेर, | धौलपुर |
| गाय | 139 | उदयपुर | धौलपुर |
| भैंस | 137 | जयपुर | जैसलमेर |
| भेड़ | 79 | बाड़मेर | बाँसवाड़ा |
| ऊँट | 21.3 | जैसलमेर | प्रतापगढ़ |
| गधे | 23 | बाड़मेर | टोंक |
| घोड़े | 34 | बीकानेर | डूंगरपूर |

## राजस्थान में गाय की विभिन्न नस्लें

1. **गिर** – यह अजमेर, भीलवाड़ा, किशनगढ़, चित्तौड़गढ़ व बूंदी आदि में पाई जाती है। मूल स्थान गुजरात है । इसका अन्य नाम अजमेरा अथवा रहना भी है । यह अधिक दूध देने के लिए प्रसिद्ध है।

2. **थारपारकर-** यह जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर व जालौर में पाई जाती है। इसका मूल स्थान मालाणी गाँव जैसलमेर है।

3. **नागौरी-** यह नागौर, जोधपुर, बीकानेर, नोखा आदि में पाई जाती है। इसका मूल स्थान नागौर जिले का सुहालक प्रदेश है। नागौरी बैल कृषि हेतु प्रसिद्ध है।

4. **राठी-** यह बीकानेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर व चूरू आदि में पाई जाती है । यह लाल सिंधी व साहीवाल की मिश्रित नस्ल है जो दूध देने में अग्रणी है । इसे राजस्थान की कामधेनु भी कहा जाता है।
5. **कांकरेज-** बाड़मेर, जालौर व नेहड़ क्षेत्र में पाई जाती है । इसका मूल स्थान गुजरात का कच्छ का रण है। बोझा ढ़ोने व दुग्ध उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है। बेल अधिक बोझा ढ़ोने एवं तीव्र गति के लिए प्रसिद्ध है।
6. **हरियाणवी-** सीक,र झुंझुनूं, जयपुर, श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ आदि में पाई जाती है इसका मूल स्थान रोहतक, हिसार, व गुड़गाँव हरियाणा है । यह दुग्ध भार वाहन दोनों दृष्टियों से उपयुक्त है।
7. **मालवी-** झालावाड़, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, कोटा, व उदयपुर में पाई जाती है। मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र इसका मूल स्थान है । यह नस्ल नागौरी की तरह भारवाही नस्ल है। मालवी अलवर व भरतपुर में हल जोतने हेतु प्रसिद्ध है।
8. **सांचौरी –** सांचौर, उदयपुर, पाली, सिरोही में पाई जाती है।
9. **मेवाती-** अलवर व भरतपुर में पाई जाती है।

**<u>विदेशी नस्लें</u>**

1. **जर्सी गाय –** यह नस्ल मूलतः अमेरिकी है । यह सर्वाधिक दूध देने हेतु प्रसिद्ध है।
2. **हॉलिस्टिन गाय –** हॉलिस्टिन गाय का मूल स्थान हॉलैंड व अमेरिका है। यह भी अधिक दूध देती है।
3. **रेड डेन गाय –** रेड डेन का मूल स्थान डेनमार्क है

**भैंसों की नस्लें**

**1. मुर्राह –** राजस्थान में सर्वाधिक संख्या वाली नस्ल, भैंस की सर्वोत्तम नस्ल।

**2. जाफराबादी –** सर्वाधिक शक्तिशाली नस्ल।

**3. मेहसाणी –** मूल स्थान मेहसाणा।

**4. बदावारी / भदावरी –** मूल स्थान उत्तरप्रदेश

**भेड़-**

देश में भेड़ों की संख्या के आधार पर राज्य का तीसरा स्थान है **सर्वाधिक भेड़ें बाड़मेर में** और **न्यूनतम बाँसवाड़ा में** पाई जाती हैं

**भेड़ों की नस्लें**

1. **चोकला भेड़ –** झुंझुनूं, सीकर ,चूरू, बीकानेर व जयपुर जिले में यह पाई जाती है । इसे छापर एवं शेखावाटी के नाम से भी जाना जाता है। इसे भारत की मेरिनो कहा जाता है ।इससे प्राप्त हुई फाइन सर्वोत्तम किस्म का है।
2. **मालपुरी / अविकानगरी भेड़ –** यह जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, बूंदी, अजमेर, भीलवाड़ा में पाई जाती है । ऊन मोटी होने के कारण गलीचे के लिए उपयुक्त है। इसे देसी नस्ल भी कहा जाता है।
3. **सोनाड़ी भेड़ –** उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़ ,बाँसवाड़ा भीलवाड़ा में पाई जाती है ।इसका **उपनाम – चनोथर**
4. **पूगल भेड़ –** बीकानेर के पश्चिमी भाग व जैसलमेर ,नागौर में पाई जाती है।
5. **मगरा भेड़ –** इसे बीकानेरी चोकला भी कहा जाता है । यह बीकानेर जैसलमेर और नागौर जिले में पाई जाती है।
6. **नाली भेड़ –** यह श्रीगंगानगर, झुंझुनूं, सीकर, बीकानेर व चूरू में पाई जाती है । इसकी ऊन घने व लंबे रेशे वाली होती है।
7. **मारवाड़ी भेड़ –** जोधपुर, बाड़मेर, नागौर पाली, सिरोही में पाई जाती है।
8. **जैसलमेरी भेड़ –** यह जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर में पश्चिमी भाग में पाई जाती है। सर्वाधिक ऊन इस नस्ल की भेड़ों से प्राप्त होती है।

**भेड़ों की विदेशी नस्लें**

1. **रूसी मेरिनों भेड़ –** टोंक, सीकर, जयपुर में बहुतायत में पायी जाती है।
2. **रेम्बुलेट भेड़ –** टोंक

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

**प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)**

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKj14nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्टूबर | 74 प्रश्न आये |
| RAS Mains 2021 | October 2021 | 52% प्रश्न आये |
| RAS Pre. 2023 | 01 अक्टूबर 2023 | 96 प्रश्न (150 मेंसे) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |

whatsapp - https://wa.link/gjvgqe 1 web.- https://shorturl.at/CDPX4

FREE SAMPLE

| | | |
|---|---|---|
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| RPSC EO/RO | 14 मई (1st Shift) | 95 (120 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्टूबर (1st शिफ्ट) | 79 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |
| Raj. CET Graduation level | 07 January 2023 (1st शिफ्ट) | 96 (150 में से ) |
| Raj. CET 12th level | 04 February 2023 (1st शिफ्ट) | 98 (150 में से ) |

**& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.**

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# Our Selected Students

## Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

| Photo | Name | Exam | Roll no. | City |
|---|---|---|---|---|
| | **Mohan Sharma S/O Kallu Ram** | Railway Group - d | 114195120370022 | PratapNagar Jaipur |
| | **Mahaveer singh** | Reet Level- 1 | 1233893 | Sardarpura Jodhpur |
| 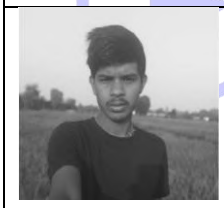 | **Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati** | SSC CHSL tier-1 | 2006018079 | Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP |
| N.A | **Mahender Singh** | EO RO (81 Marks) | N.A. | teh nohar , dist Hanumangarh |
| | **Lal singh** | EO RO (88 Marks) | 13373780 | Hanumangarh |
| N.A | **Mangilal Siyag** | SSC MTS | N.A. | ramsar, bikaner |

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | **MONU S/O KAMTA PRASAD** | SSC MTS | 3009078841 | kaushambi (UP) |
| | **Mukesh ji** | RAS Pre | 1562775 | newai tonk |
| | **Govind Singh S/O Sajjan Singh** | RAS | 1698443 | UDAIPUR |
| 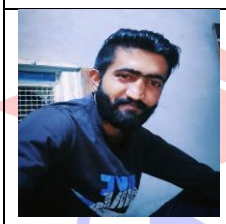 | **Govinda Jangir** | RAS | 1231450 | Hanumangarh |
| N.A | **Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma** | RAS | N.A. | Churu |
| | **DEEPAK SINGH** | RAS | N.A. | Sirsi Road , Panchyawala |
| N.A | **LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL** | RAS | N.A. | AKLERA , JHALAWAR |
| N.A | **Ramchandra Pediwal** | RAS | N.A. | diegana , Nagaur |

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | **Monika jangir** | RAS | N.A. | jhunjhunu |
| | **Mahaveer** | RAS | 1616428 | village-gudaram singh, teshil-sojat |
| N.A | **OM PARKSH** | RAS | N.A. | Teshil-mundwa Dis- Nagaur |
| N.A | **Sikha Yadav** | High court LDC | N.A. | Dis- Bundi |
| | **Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel** | Rac batalian | 729141135 | Dis.- Bhilwara |
| N.A | **mukesh kumar bairwa s/o ram avtar** | 3rd grade reet level 1 | 1266657 | JHUNJHUNU |
| N.A | **Rinku** | EO/RO (105 Marks) | N.A. | District: Baran |
| N.A. | **Rupnarayan Gurjar** | EO/RO (103 Marks) | N.A. | sojat road pali |
| | **Govind** | SSB | 4612039613 | jhalawad |

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | **Jagdish Jogi** | EO/RO (84 Marks) | N.A. | tehsil bhinmal, jhalore. |
| | **Vidhya dadhich** | RAS Pre. | 1158256 | kota |

*And many others.....*

**नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें**

**Whatsapp करें –** https://wa.link/gjvgqe

**Online order करें –** https://shorturl.at/CDPX4

**Call करें - 9887809083**

FREE SAMPLE